International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 31-03-2025, Accepted: 30-04-2025, Published: 15-05-2025
Volume 11, Issue 2, 2025, Page No. 38-39

स्त्री विमर्श पर आधारित प्रमुख उपन्यास की समीक्षा

डॉ. सरोजनी कोशले
हिंदी विभाग, सरकार कॉलेज बिर्रा, जांजगीर चांपा, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश
किसी भी सभ्यता की विशिष्टता एवं उसके विकास की सीमा को जानने के लिए उस सभ्यता की स्त्री की स्थितियों का अवलाकेन करना अति आवश्यक होता है। क्योंकि मानव जीवन के सर्वांगीण विकास में स्त्री की अहम भूमिका होती है। भारतीय समाज में स्त्रीयों के प्रति तथा उसके जीवन के प्रति अनेक पहलू जैसे सामाजिक, धामिर्क, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक इत्यादि पहलूओं पर अनेक लेख लिखे हैं। परन्तु समाज शास्त्रियों के द्वारा इस क्षत्रे पर ज्यादा ध्यान केंद्रित नहीं हो पाया यहीं कुछ साहित्य में भी दिखाई पड़ता है। परन्तू समय के साथ–साथ साहित्य में महिलाओं की स्थिति परिस्थिति संघर्ष को साहित्यकार भलि–भाति से चित्रित किया है। इस दिशा में स्त्री विमर्श पर आधारित कुछ पम्रुख उपन्यास निम्न हैं। जिसमें स्त्रीयों के त्याग सघंर्ष की कहानी को उकेरा गया है।

मूल शब्दः सर्वांगीण, समाज शास्त्रिया, मोहभंग, रखैल

1. आवाः

आवा उपन्यास चित्रा मुदद्गल द्वारा लिखित एक स्त्री विमर्श और श्रमिक जीवन पर आधारित एक बड़ा उपन्यास है। "यह उपन्यास एक मजदूर के बटेी के मोहभगं, पलायन और वापसी की कहानी है।"[1] संपूर्ण कथावस्तू 544 अध्याय पृष्ठों में तथा लगभग 18 अध्यायों में विभक्त है। कर्इ भी अध्याय को लेखिका द्वारा नामकरण नही किया गया है।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका ने बड़ी सहजता से पात्रों का संयोजन कर उनका चरित्र चित्रण के साथ कथोपकथन तत्व की लगभग सभी विधियों का प्रयागे करते हुए कथावस्तु को अधिक यथार्थ बनाने के लिए उसका देशकाल तथा वातावरण को महत्वपर्णू माना है। उपन्यास में मुख्य कथा के साथ अनेक उपकथाए हैं। लेकिन सभी उपकथाओं को मुख्य कथा के साथ लेखिका ने इस तरह से जाड़े दिया कि वह सभी मख्ुय कथा के अंग बनकर आऐ हैं। कथावस्तु की लगभग सभी विशेषताएँ इसमें विद्यमान है। इसे लेखिका का कौशल ही मानना उचित हागेा।

बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में लिखा गया आवा उपन्यास उद्देश्य की दृष्टि से भी महत्वपर्णू रहा है। आवा उपन्यास का उद्यश्ेय का उद्देश्य उदान्त है। नारी विमर्श प्रस्तुत उपन्यास का प्रमुख उद्देश्य है। साथ ही अन्य अनेक उद्देश्यों की स्थापना लेखिका ने किया है।

संक्षपे में आवा उपन्यास पूरी तरह से स्त्री विमर्श के क्षत्रे में सफल उपन्यास साबित हातेा है।

2. अनारो

मजूंल भगत द्वारा लिखित अनारों उपन्यास में निम्न वर्ग के नारी संघर्ष की जीवन गाथा को उकेरा गया है। उपन्यास का नाम उपन्यास की प्रमुख स्त्री पात्र एवं नायिका अनारों के नाम पर रखा गया है।

इस उपन्यास में निम्न वर्ग की स्त्री की समस्याओं को चित्रित किया गया है साथ ही समानांतर रूप से उच्च वर्ग की स्त्रियों के इसी प्रकार शाषेण को भी दर्शाया गया है। अनारो जहाँ काम करती थी, वहां मोटी सेठानी की भी यहीं कहानी थी। सेठानी का पति भी नंदलाल की तरह अर्थात अनारो के पति की तरह रखैल के साथ अनैतिक संबधं बनाता है। इस बात को जानते हुए भी वह अपने पति को छोड़ नहीं पाती है, छोड़ना नहीं चाहती। एक प्रकार से लेखक इस उपन्यास के द्वारा यह दर्शाती है कि स्त्री चाहे किसी भी वर्ग की क्यों न हो दानों की पुरूष पक्षधर मानसिकता नहीं बदल पायी है। पितृसन्तात्मक समाज में स्त्रियों पर पुरूषों का आधिपत्य कायम है।

इस उपन्यास के माध्यम से लेखिका इस बात से इंगित करती है कि स्त्री की यह अपनी सोच ही उसे मुक्त होने नहीं दे रही है। लेखिका यह प्रश्न भी खड़ा करती है कि क्यों यह स्त्रियाँ अपने मुद्दों, अपनी समस्याओं के कारकों के बारे में नहीं सोच रही है? फिर परूुष भी स्त्री की मानसिकता का दुरूपयोग क्यों नहीं करेगा? समाज में पुरूष का जो रूड़ प्रारूप है कि चाहे वह कितना भी अनुचित कार्य क्यों ना करे, उसकी स्त्री उस कभी ठुकराएगी नहीं। इस बात की पुष्टी मिलती है। स्त्री की यह नारी सुलभ कमजोरी ही पुरूष की इस साचे को बलवती बनाती है। उसका मिथ्या वर्ग बना रहगेा।

इस प्रकार यह उपन्यास स्त्री के त्रासद जीवन को बखूबी निश्चित करता है, मंजूल भगत नारी जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं को बिना किसी बड़बालेपन के कथानक एवं घटनाओं के द्वारा चित्रित करने में सफल रही है, इसमें कर्इ दो राय नहीं हो सकती।

3. भाल्म ली

दाम्पत्य जीवन पर आधारित नासिरा शर्मा के उपन्यास शाल्मली की नायिका शाल्मली अपने वैवाहिक संबंध को मधुर बनाने की पूरी कोशिश करती है परंतु दंभी पुरूष नरेश पत्नी शाल्मली को पैरों की जूती समझता है। शाल्मली को अपना जीवन निरर्थक लगने लगता है। वह सोचती है– "धर्मपत्नी बनकर इतना तिरस्कार इतना अपमान इतनी घृणा, इतना अंकुश यह भी कर्इ जीवन है? बार–बार मरघट तक ले जाने और जीवित जल जाने से पहले चिता से खिचंकर उतारने का यह क्रम, बलपूर्वक जीवन दान देने की यह हठ, न पूरी तरह मरने दिया जाता है, न पूरी तरह जीने दिया जाता है। कभी–कभी जीवन और मृत्यु में कितना कम फर्क रह जाता है।"[2]

4. कठ गुलाब

मृदूला गर्ग द्वारा लिखित कठ गुलाब उपन्यास में हाशिए पर जाती सृजनात्मक संस्कृति को पकड़ने की कोशिश लेखिका द्वारा कि गई है।

अवसान के चिन्हों को सुक्ष्मता से उकेरने की प्रतिबध्दता पूरे उपन्यास में दिखाई देती है। इस उपन्यास में उत्तर–आधुनिकता ने स्त्री पुरूष संबंधों को समझने के नए कोण विकसित किए हैं।

यह स्थिति संवगों और मानवीय संवदेनाओं को कोई महत्व नहीं देता।

लेखिका ने विभिन्न आर्थिक एवं मानसिक संस्तरों की स्त्रियों के माध्यम से उस स्त्रीत्व और सृजनशीलता को एक उभयनिष्ठ पहचान दिलाने के पीछे सामाजिक यथार्थ का दबाव और उस दबाव में घुटती मानवता की संरक्षा दृष्टि है। काष्ठ पुष्प उसी दबाव एव घुटन के बीच, जहां अपना अस्तित्व बचाए रखता है एक चनुौतिपूर्ण कार्य है, लेखिका ने उपन्यास में नारीवादी चेतना को प्रतिस्थापित कर उनके अनेक समस्याओं को उकेरा है। स्त्री शिक्षा, बाल मजदूरी, अकेलापन इत्यादि अनेकानेक वदेनाओं का चित्रण बड़े ही मार्मिक ढंग से किया है।

5. छिन्नमस्ता

डॉ. प्रथा खेतान द्वारा लिखित छिन्नमस्ता उपन्यास जिसका पक्राशन 1993 में हुआ। यह प्रभा जी का सबसे अधिक चर्चित उपन्यास है। उपन्यास पूर्वदीप्ति या फ्लैश बैक शैली में लिखा गया है। उपन्यास में स्त्रीपात्र प्रिया के माध्यम से बताया हैं कि नारी निरंतर शोषित है, सामाजिक परंपरा से, पुरूष की पशुवत भखू से, जो जितना आगे जाना चाहता हैं। उसे उतना संघर्ष करना पड़ता है। लड़के की चाह रखने वाली माँ से, बड़े भाई से, पति नरेन्द्र से और अंत में समाज व्यवस्था से। वह अपनी अस्मिता को पहचानकर खुद के आत्मबल से उभरती है। चाहे वह अकेलेपन की जिंदगी काटती है, मगर विवाह इस संस्कार के नाम पर शारिरिक और मानसिक खराचें पहुँचने से बेहतर है, अकेलेपन की जिंदगी।

प्रस्तुत उपन्यास में स्त्री मन के विविध पहलुओं को हमारे सामने पेश किया गया है। छिन्नमस्ता उपन्यास नारी पीड़ा का दस्तावेज है।

6. अल्मा कबूतरी

अल्मा कबूतरी उपन्यास की लेखिका मैत्रयी पुष्पा जी है। उपन्यास में लेखिका कबूतरा जनजाति की तीन पीढ़ियों के संघर्ष को चित्रित किया है। पहली पीढ़ी भरूी बाई, दूसरी पीढ़ी कदम बाई और तीसरी पीढ़ी अल्मा कबूतरी हैं। तीनों पीढ़ी के नारियों के संघर्षमय जीवन को इसमें उकेरा है। पहली पीढ़ी की नारी–पात्र भरूी एक विद्राही नारी के रूप में ही नजर आती है। भरूी कबूतरा जाति की साहसिक व हिम्मतवाली नारी है, वह अपने हाथों की लकीरों पर कम स्वयं के कर्म पर ज्यादा विश्वास रखती है। भरूीबाई बचपन से ही अपनी दादी से राजा महाराजा का कहानी सुना करती तथा राजाओं से मिलने की इच्छा रखती उसने झांसी के राजा से मिला भी राजा के भाषण से ओ प्रेरित होकर अपने कबूतरा जाति के लागेों के रहन–बसन में सुधार लाने की कोशिश भी किया, उसके पति के मृत्यु के बाद भी वह कमजोर नहीं पड़ी और वह अपने चार माह के पुत्र रामसिंह को अपने गादे में लिए हुए दृढ़ निश्चय से संकल्प करती है– "कौल भर रही थी पति वीरता लुगाई अपने आदमी संग सती होती है। मैं मर्द की व्याहता खुद को तब मानूगी जब अपने पुत्र को पढ़ा–लिखाकर इसी कचहरी के दरवाजे पर खड़े कर दुंगी।"[3]

अल्मा कबूतरी उपन्यास में दूसरी पीढ़ी की नारी पात्र कदमबाई है उसकी शादी कबूतरा जाति के जंगलिया से होता है। किंतु धाखे से पुलिस उसे मार देती है। पति के मृत्यु के बाद कदमबाई बटे को जन्म देती है। कदमबाई अपने को महाराणा प्रताप की वंशज मानती है। वे अपने बटे को हिम्मती व बहादूर बनाती है, उसके लिए उसे अनेक कठिनाइर्यो का सामना करना पड़ता है। वह अपने बटे को अच्छे मार्ग पर चलना सिखाती ह ै प्रभा एक विधवा होते हुए भी अपने आत्मसम्मान की रक्षा के लिए स्वयं लड़ाई लड़ती है, वह अपने पुत्र से कहती है "देखता नहीं पुलिस पीटने आ जाती है। ठेकेदार वाले बबेात में हमें खदेड़ते हैं। पर बटेा हम भी कम नहीं, भखू–प्यासे भी तापे खाने लूटपाट से बाज नहीं आते।"[4] उपन्यास में तीसरी पीढ़ी की नायिका अल्मा कबूतरी, जो कबूतरा जाति के जागरूक साहसी भरूी बाई की पाती है, जिसके पिता रामसिंह कबूतरा जाति का एकमात्र पढ़ा–लिखा व्यक्ति है जो मास्टर है। अल्मा कबूतरी में साहस, उत्साह जागतृ विचारधारा विरासत से मिली थी।

कबूतरा जाति को आगे बढ़ाने के लिए तथा शिक्षित करने के लिए अल्मा बहुत संघर्ष करती है। तथा सफल भी होती है।

निष्कर्ष

इस लेख के माध्यम से स्त्री समस्याओं के प्रति जागतृ दृष्टिकोण रखकर स्त्रीयों की स्थिति में सुधार लाने के लिए प्रयास किए गए हैं। मानव समाज में स्त्रीयों की संख्या लगभग पुरूषों के सामान ही है। स्त्री पुरूषों के साथ हमेशा से रही है फिर भी स्त्रीयों को नकारा जाता है। उसे इस समाज में अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करना पड़ता हैं। सभी उपन्यास के माध्यम से यह दृ ष्टिगाचेर भी होता है कि इस समाज में स्त्रीयों को अपने हक के लिए, अपने आत्म सम्मान के लिए खुद संघर्ष करना पड़ता है। स्त्रीयों को आगे बढ़ाने तथा उसे समाज के अहम हिस्सा मानने की आवश्यकता है। क्योंकि स्त्रीयों में जो शक्ति है वह अपने संघर्ष से निखरती है।

आभार

इस शोध पत्र को लिखने के लिए मेरी निर्देशिका डॉ. रेखा दुबे ने मुझे प्रेरित किया। मै उनका आभार व्यक्त करती हूँ। साथ ही मरे सहकर्मियो का भी आभार व्यक्त करती हूँ। जिनके सहयागे से यह शाध पत्र पर्ण हो पाया है।

सन्दर्भ सूची

1. चित्रा, मुद्दगल, (1999), आवा, सामयिक प्रका ान नई दिल्ली
2. भार्मा, नासिररा, (1987) भाात्मलेी, किताबघर दिल्ली
3. मैत्रयी, पुश्पा, (2011) अल्मा कबूतरी, राजकमल प्रका ान दिल्ली
4. मैत्रयी, पुश्पा (2011) अल्मा कबूतरी, राजकमल प्रका ान दिल्ली।